

डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध आयाम

Sukesh*

TGT Hindi, RPSKV Rithala, Delhi

सार - प्रकृति की प्रेरणा के द्वारा हमें काव्य का ज्ञान प्राप्त होता है। कविता करने की प्रेरणा हमें प्रकृति से ही प्राप्त होती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भी प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। छायावादी युग में प्रकृति का चित्रण काफी मात्रा में हुआ है। इस युग के प्रत्येक कवि ने प्रकृति का चित्रण अपनी अपनी कविताओं में अपने तरीके से किया है। इसलिए छायावाद की मुख्य विशेषता प्रकृति चित्रण बन गई है। छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में आलम्बन और उद्दीपन दोनों ही रूपों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। वर्मा जी ने अपने काव्य में प्रकृति को विशेष महत्व दिया है। वर्मा जी का प्रकृति चित्रण परम्परागत न होकर मौलिक है। वर्मा जी ने प्रबन्ध और गीत दोनों ही प्रकार की रचनाओं में प्रकृति चित्रण, प्रकृति के अनुसार किया है। नदी वर्णन, पर्वतवर्णन, सागरवर्णन, बादल बिजली वर्णन, वनस्पति वर्णन खेत-खलिहान वर्णन, नगर वर्णन, जीव-जन्तुओं का वर्णन, पशु-पक्षियों का वर्णन, सूर्य-चाँद का वर्णन, प्रातःसंध्या-दोपहर का वर्णन, ऋतु-माह वर्णन आदि के विषय में वर्मा जी बड़ा सुन्दर चित्रण किया है।

-----X-----

“वसंत में पुष्पों का विकास और उनकी सुगंधि, शीतल, मंद समीर और चारों ओर तरु-लताओं की नवीनता, ग्रीष्म में पृथ्वी और आकाश में ज्वाला, पशु-पक्षियों तक को छाँह की खोज, वर्षा में घटाओं की छटा और धमाके का पानी, शरद में शीतलता और छमाके के दर्शन, हेमन्त में तुषार और शीतल पवन तथा शिशिर में दिनमान की न्यूनता, चक्रवात-चक्रवाती की व्यथा और शीत की अधिकता, प्रेम व्यथा की अनुरंजित इतिवृत्तात्यकता में विशेष हृदयग्राहिणी हो जाती है। इस प्रकार मानव जीवन का प्रकृति से इतना संबंध हो जाता है कि अनुभव की प्रत्येक स्थिति में इतना संबंध हो जाता है कि अनुभव की प्रत्येक स्थिति में प्रकृति सहचरी के समान खड़ी हो जाती है।” वर्मा जी ने अपने काव्य में प्रकृति को लम्बे समय तक साथ रहने एक एवं सौन्दर्य की अध्यक्षा के रूप में चित्रित किया है। वर्मा जी को प्रकृति के दुख में दुखी और सुख में सुखी प्रतीत होता है। रामकुमार वर्मा को प्रकृति ने ही निराश मन को धीरज प्रदान किया है। अतः रामकुमार वर्मा के काव्य में प्रकृति चित्रण में अनेक आयामों पर विचार किया गया है। जो निम्नलिखित हैं।

(1) नदी वर्णन:-

रामकुमार वर्मा भारतीय संस्कृति के अनुयायी रहे हैं। भारतीय संस्कृति में नदी को 'मैया' कहा गया है। वर्मा जी ने 'उत्तरायण'

के चतुर्थ सर्ग 'उद्धार' में त्रिवेणी का वर्णन निम्न रूप से किया है।

“सजा त्रिवेणी की वेणी में पुण्य पुष्प का हार है,

यहाँ भावमय भक्ति-साँस में सहज-शील-संचार हैं।”

पित्त-पावनी गंगा का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं-

“यहाँ कुम्भ का अमृत और सुरसरि का पावन नीर है,

जैसे वरुण देव ने वर्तुल खींची एक लकीर है।”

'उत्तरायण' में ही कवि ने सरयू नदी का वर्णन इस प्रकार किया है।

“सरयू तट पर धन-धान्य पूर्ण धरती थी।”

सरिता के किनारे का सुन्दर रूप पहचानने में रामकुमार वर्मा का मन नहीं चूकता।

इनके लिए नदी की धारा का प्रवाह सरिता के सुखकर तट सरिता को बांध लेने वाले बाहु पाश है, कवि ऐसा लगता है। कि नदी तट के बिना नियमित होकर चलती है। कवि सरिता-तट को सम्बोधित करते हुए लिखते हैं-

“ओ सरिता-तट सुखकर।

जब सरिता के अंचल में नभ

सो जाता है शिशु बनकर,

तभी लहर की सरस थपकियाँ

देते हो तुम अति मृदुतर।”

(2) पर्वत वर्णन:-

वर्मा जी कविताओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि वे प्रकृति के कण-कण में समाए हुए हैं। वर्मा जी 1944 ई. में हिमालय को सम्बोधित करते हुए उनकी रचना की पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं:-

“किसने कहा कि तुम जड़ हो,

क्या तुम में है कैलास नहीं?

क्या प्रलयंकर के डमरू से,

नचा कण-कण में नाश नहीं?

वह महाप्रलय फिर से होगा,

होगा विनाश प्राचीरों का।”

संसार सूनगा शीघ्र, कायरों का स्वर कितना धीमा है। यह तुग हिमालय आज हमारी छाती की दृढ़ सीमा है।”

(3) सागर वर्णन:-

जल की गहराई मन की गहराई को व्यक्त करने में विशेष रूप से सहायक बनाती है। वर्मा जी के काव्य में जलीय बिम्बों में सर-सरिता, सागर-सरोवर, निर्झर, लहर और तट के बिम्ब प्रधान हैं। वर्मा जी ने अपने काव्य में सुन्दर रूपों का ही वर्णन किया है। इसका कारण उनके मन की सुन्दरता हो सकती है। ‘रूप साम्य’ कविता में उन्होंने सागर का वर्णन इस प्रकार किया है।

“निशि में जब तम का था प्रसार,

खद्योत उड़े थे तीन चार,

तक-सागर में था डूब रहा,

संसार लिए निज नीद-भार।

रामकुमार वर्मा ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से थी सागर का वर्णन किया है। ‘14 अगस्त की रात’ की पंक्तियाँ देखिए।

“एक दिन की कराह से अगस्त ऋषि ने

एक अंजलि ही में समस्त सिंधु पी लिया।”

कवि संसार की क्षण – भंगुरता को देखकर ऐसे लोक में पहुँचना चाहता है जहाँ किसी प्रकार का कोई बंधन न हो, जहाँ पर किसी भी अपराध की चिन्ता न हो। इसके लिए वह उस परम सत्ता से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है।-

“प्रश्न-चिह्नों में उठी है,

भाग्य-सागर की हिलोरें।

आँसुओं से रहित होंगी,

क्या नयन की नमित कोरें?

जे तुम्हें कर दे द्रवित वह अश्रुधारा चाहता हूँ।

में तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।”

एक अन्य उदाहरण भी अवलोकनीय है।

“क्या इसमें है परिव्याप्त आग! मुझमें भी जागी वही आग। मैं दृढ़ हूँ, सागर उठे, देखना, निकल न आये कही झाग।।” वर्मा जी ने कही-कही पर सरोवर का भी वर्णन किया है।

“सरोवर में जल-केलि-विलास

तरंगों से करता था चन्द

लहर से लिपट-लिपट आनन्द

ले रहा था वह समुद्र, सहास।”

बादल-बिजली वर्णन:-

वर्मा जी ने अंजलि में अपने गीतों के द्वारा प्रकृति के अनेक प्रकार के सुन्दर एवं स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत किए हैं। ‘तिरस्कार’ नामक कविता में यह प्रभाव पूर्ण रूप से दिखाई देता है।

“उज्ज्वल तारों का मिटना कहलाता प्रातः काल,

बदल के जल उठने को कहते विद्युत माल।।”

रामकुमार वर्मा जी ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। ‘बादल’ की बूंद को नीचे गिरते देखकर कवि को लगता है। कि यह पतन वसुधा का अभिनन्दन बनेगा। ‘बादल’ के तन काले है तो क्या, मन उज्ज्वल है-

काले तन के उज्ज्वल मन!

कलुष रहित हो तुम, फिर भी क्यों इतना प्रिय है अधः पतन?”

मेघ क्या हैं, नभ के जीवन में लिखे काले-काले भाग्य अंक है।-

मेघों का यह मंडल अपार।

जिसमें पड़कर तम एक बार ही

कर उठता है चीत्कार!

ये काले-काले भाग्य अंक

नभ के जीवन में लिखे, हारा?”

वर्मा जी ने घुमड़कर आयी घटा की कल्पना नर्तकी के रूप में करते हुए एक सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत किया है।

“नभ की रंगभूमि पर उसने

विधुत में नर्तन कर,

हँस कर मुक्तावलि की माला बुँद-बुँद बरसायी।।”

(6) काले-काले बादल कवि को विहार करते हुए श्यायल हंस लगते हैं-

“कुछ श्यामल हंसों के दल से

बदल करते आये विहार।

संख्या के झीने पट पर जैसे

रेखाएँ खिंच गयी चार।।”

रामकुमार वर्मा को वर्षा के मूल में पीड़ा की अनुभूति होती है। मेघों का यह मण्डल अपार है, जिसमें पड़कर तय एकदम चीत्कार कर उठता है। पूर्व दिशा अपने प्रकाश रूपी शिशु की मृत देह पर माथा रखकर अंधकार रूपी केश बिखरा रही है-

यह पूर्व दिशा जो यी प्रकाश की

जननी छविमय प्रभावपूर्ण,

निज मत शिशु पर रख नमित माथ

बिखराती धन-केशान्धकार।।”

“वर्षा है नभ औ धरा बीच

मिलने का है क्या बंधा तार?

नभ में कैसा रोमांच हुआ

बिजली का विचलित लेषधार।।”

जीवन की पीड़ा के रूप में कवि ने विद्युत शब्द का प्रयोग किया है जैसे-

“मेरे वियोग के नभ में

कितना दुख का कालापन।

क्या विहवल विद्युत ही में

होगें प्रियतम के दर्शन?”

रामकुमार वर्मा जी ने दुख के लिए कालापन और विद्युत शब्द आने से कवि के दोहरे प्रतीकों की प्रतिभा स्पष्ट परिलक्षित होती है।

वनस्पति वर्णन:-

रामकुमार वर्मा ने अपनी रचनाओं में पेड़ों, लताओं, फूल-कलियाँ वनस्पति वस्तुओं का वर्णन पर्याप्त मात्रा में मिलता है। वर्मा जी सुबह की हवा से कहने हैं कि तुम धीरे से आओ! मेरे पल्लव सोते हैं तुम्हारी आहट से उनके सपनों के तार टूट न जायें-

“सरल सुमन शिशुओं ने तेरी,

आहट से दी आँखें खोल।

कलियों को मत छूओ,

बालिकाएँ हैं, सरला है अनजान,”